ISBN:978-81-974990-9-8

6. कोविड़–19 का शिक्षा पर प्रभाव और नवीन आयाम

डॉ. अमृता तिवारी

सहा. प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष–शिक्षा विभाग),
अंजनेय यूनिवर्सिटी, नरदहा, रायपुर (छ.ग.).

परिचयः–

जब–जब मनुष्य प्रजाति ने प्रकृति पर नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश की है तब तब प्रकृति ने उन्हें यह एहसास कराया है कि मनुष्य प्रकृति को नियंत्रित नहीं कर सकता है मनुष्यों ने अब एक बार फिर प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने का प्रयत्न किया है जिसका खामियाजा विश्व को कोरोना महामारी के रूप में मिला है।

चीन के वुहान शहर से प्रारंभ होने वाले कोरोना वायरस ने आज संपूर्ण विश्व को अपने चपेट में ले लिया है। पूरे विश्व को इस महामारी ने हिला कर रख दिया है।

विशेषज्ञों और जानकारो की माने तो कोरोना वायरस एक कृत्रिम वायरस है जो एक विशेष वायरस फैमिली से संबंधित है और यह वाइरस व्यक्ति से व्यक्ति बहुत तेजी से फैलता है कोरोना महामारी का पूरे विश्व में विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस महामारी ने लोगों के सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य के क्षेत्र को, शिक्षा के क्षेत्र को एवं लोगों की मानसिकता को बहुत अधिक प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभाव की बात करें तो कोरोना वायरस का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही गंभीर प्रभाव पड़ा।

भारत एवं पूरे विश्व के विद्यालय और महाविद्यालय, छात्र–छात्राओं, शिक्षको को इस महामारी के गंभीर परिणाम काफी समय तक भुगतने पड़े। भारतीय शहरों में तो ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था ने थोड़ा बहुत परिस्थितियों को संभाल लिया किंतु दूरस्थ एवं पिछड़े अंचलों में रहने वाले विद्यार्थियों को इस विपदा का गंभीर खामियाजा भुगतना पड़ा। भारत के पिछड़े इलाकों में इंटरनेट की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण विद्यार्थी शिक्षा से दूर होते चले गए किंतु शहरों के विद्यार्थी इंटरनेट एवं ऑनलाइन पढ़ाई के द्वारा नवीन टेक्नोलॉजी से परिचित भी हुए।

कोरोना वायरस की उत्पत्ति, लक्षण एवं प्रभावः–

COVIDशब्द 1920से पहले भी अस्तित्व में था। वास्तव में कोविड शब्द की खोज सबसे पहले 1963 में टोरंटो के ओंटारियो कैंसर इंस्टिट्यूट में हुई थी तभी से दुनिया के अलग–अलग देश में इसके कई म्यूटेशन पाए गए किंतु 2019 के अंत में खोजे गए COVID19 को 1920 के विश्व इतिहास में दर्ज किया जाएगा।

11 मार्च 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO द्वारा नोवेल कोरोना वायरस को (कोविड–19) को विश्व महामारी घोषित कर दिया गया। वास्तव में भारत में कोरोनावायरस का पता पहली बार 30 जनवरी 2020 को केरल में वुहान से लौटे एक संक्रमित छात्र के द्वारा लगा। कोरोना वायरस शरीर की कोशिकाओं से लेकर जींस तक को प्रभावित करते हैं। कोरोनावायरस कितने प्रतिशत तक शरीर को संक्रमित किया है इसका पता एंटीबॉडीज टेस्ट की जगह टी सेल्स मतलब कोशिकाओं की जांच से भी चल जाता है।

कम लक्षण वाले कोरोना संक्रमित मरीजों में एंटीबॉडीज नहीं होती किंतु टी सेल इम्यूनिटी का स्तर अधिक होता है और इस से यह पता किया जा सकता है कि कौन सा व्यक्ति संक्रमित है या किसी क्षेत्र के कितने लोग संक्रमित हैं। ज्ञातव्य है कि दिसंबर 2019 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के चीन कार्यालय को वुहान शहर में निमोनिया जैसे वायरस के फैलने की खबर मिली ।इस निमोनिया जैसे वायरस का प्रमुख लक्षण थकान, तेज बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ के साथ–साथ मांसपेशियों में दर्द एवं आंखों में जलन, दस्त होना, गंध और स्वाद का पता नहीं चलता था।

इसके संक्रमण का मुख्य कारण लोगों का एक दूसरे के संपर्क में आना था एवं जब व्यक्ति के द्वारा दूषित एवं संक्रमित सतहों, वस्तुओं को छूने के बाद अपने आंख, नाक एवं मुंह को छूते थे तो यह वाइरस सांस के साथ अंदर चले जाते थे और लक्स या फेफड़ों को संक्रमित करना प्रारंभ करते थे जिससे सांस लेने में तकलीफ प्रारंभ हो जाती थी। इससे बचने के लिए विभिन्न तरीके अपनाए गए जिसमें शारीरिक संपर्क बिल्कुल न करने की, मास्क पहनने की, आवश्यक दवाइयां लेने की, वैक्सीन लेने की, क्वॉरेंटाइन, सामाजिक दूरी बनाए रखने की, पर्याप्त वेंटिलेशन की एवं बार–बार हाथ धोने की सलाह दी गई।

संक्रमण बहुत ज्यादा ना हो पाए इसके लिए सरकार द्वारा पूरे भारत में लॉकडाउन लगा दिया गया सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थानो को बंद करने का आदेश दिया गया एवं (वर्क फ्रॉम होम) घर से ऑनलाइन कार्य करने की अनुमति प्रदान की गई जिसका परिणाम यह हुआ कि लोगों का आपसी संपर्क एकदम बंद हो गया जो इस महामारी को रोकने में सहायक हुआ किंतु इस लॉकडाउन का लगभग सभी क्षेत्रों में बहुत नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिला।

लोगों की अर्थव्यवस्था एकदम डगमगा गई। यद्यपि सरकारी नौकरी वालों को आर्थिक समस्याओं का अधिक सामना नहीं करना पड़ा लेकिन जो प्राइवेट सेक्टर में काम कर रहे थे उनकी तनख्वाह बंद हो गई या बहुत कम प्रतिशत में दी गई। व्यापारियों की स्थिति तो और भी खराब होती चली गई क्योंकि लॉकडाउन के कारण उनके व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद हो गए थे।

निम्न वर्गी कर्मचारीयों का काम छूट जाने के कारण उन्हें अत्यंत आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भारत सहित पूरे विश्व में बेरोजगारी का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ गया।

कोविड–19 का शिक्षा पर प्रभावः–

कोविड–19 का शिक्षा पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ा। कोरोना महामारी के दौरान स्कूल, विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय सहित शिक्षा के सभी संस्थान अनिश्चितकाल के लिए बंद कर दिए गए थे। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षाएं एवं सभी प्रकार की परीक्षाएं स्थगित कर दी गई। कॉविड–19 ने लगभग 120 करोड़ छात्र–छात्राओं और युवाओं को प्रभावित किया।

यूनेस्को की रिपोर्ट की माने तो भारत में लगभग 14 करोड़ प्राथमिक स्तर और 13 करोड़ माध्यमिक स्तर के छात्र प्रभावित हुए। कोरोनावायरस के कारण लगे लॉकडाउन में बंद विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं एवं अनेक प्रतियोगिकी परीक्षाओं के छात्र–छात्राओं की पढ़ाई अत्यंत प्रभावित हुई। कई कक्षाओं के विद्यार्थियों को बिना परीक्षा दिए ही अगली कक्षा में प्रमोट कर दिया गया माता–पिता को अपने बच्चों की पढ़ाई एवं भविष्य की बहुत ज्यादा चिंता होने लगी। कोविड–19 का शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव के साथ–साथ सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा।

कॉविड–19 का शिक्षा पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावः–

कोविड–19 से उत्पन्न महामारी का नकारात्मक प्रभाव अन्य क्षेत्रों के अलावा शिक्षा जगत में भी बहुत ज्यादा पड़ा कुछ नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित है।

1. नियमित कक्षाओं एवं अध्ययन में बाधायेः–

कोरोना वायरस के द्वारा उत्पन्न महामारी के कारण लगे लॉकडाउन के कारण सभी सरकारी और गैर सरकारी शैक्षिक संस्थान बंद कर दिए गए। जिसके कारण विद्यार्थियों के पढ़ाई में गतिरोध उत्पन्न हो गया उनकी कक्षाएं लगती बंद हो गई विभिन्न प्रकार की परीक्षाएं रद्द्द कर दी गई कोविड–19 के कारण शिक्षा के निरंतरता में रुकावट आ गई इस कारण छोटे बड़े सभी उम्र के विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति अरुचि पैदा होने लगी।

उनका ध्यान आप पढ़ाई से हटने लगा। लॉकडाउन हटाने के बाद एक लंबे अंतराल के बाद विद्यार्थियों को पुनः वापस पढ़ने जाने में, नियमित स्कूल कॉलेज जाने में, अपनी नियमित विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन दिनचर्या को पुनः प्रारंभ करने में उन्हें अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ा।

2. ऑनलाइन पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की कमीः—

कोविड—19 के दौर में शिक्षा के निरंतरता को बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा शिक्षा संस्थानों को ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का आदेश पारित किया गया किंतु कोविड—19 के दौर में ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने जैसी नवीन तकनीक के लिए पूर्णतः प्रशिक्षित शिक्षक हर जगह उपलब्ध नहीं थे और जो शिक्षक नियुक्त किए गए थे वह पूरी तरीके से ऑनलाइन पढ़ाने के तरीके से अनजान थे यह एक अत्यंत विकट समस्या थी।

इसके अलावा छात्र भी इस ऑनलाइन पढ़ाई की नवीन तकनीक से अनजान थे। वैसे भी शिक्षा प्रणाली अक्सर छात्रों और शिक्षकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल ही रही है जिसका विपरीत असर विद्यार्थियों के पढ़ाई में पड़ा।

3. नेटवर्क की उपलब्धता न होनाः—

भारत के बड़े—बड़े शहरों में तो नेटवर्क की पूर्ण उपलब्धता थी इसके कारण वहां के छात्रों को ऑनलाइन क्लास अटेंड करने में कोई दिक्कत नहीं हुई एवं इंटरनेट संबंधित कोई व्यवधान नहीं आया किंतु सुदूर अंचल में, पिछड़े इलाकों में जहां नेटवर्क की सुविधा नहीं थी वहां के विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास की सुविधा से वंचित रहे तथा वह पूरी तरह से पढ़ाई से वंचित हो गए जिसका उनकी शिक्षा के स्तर में बहुत गिरावट दर्ज की गई ।

4. आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों द्वारा इंटरनेट का खर्च उठाने में असमर्थताः—

सरकार द्वारा सभी सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों को आदेश दिया गया कि वह ऑनलाइन पद्धति से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करें।

ऑनलाइन पढ़ाई के लिए इंटरनेट की उपलब्धता, मोबाइल, लैपटॉप, टैबलेट अनिवार्य थे किंतु आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी इस अतिरिक्त महंगे खर्च को उठाने में असमर्थ थे।

वह अपने स्वयं के लिए मोबाइल लैपटॉप, इंटरनेट एवं टैबलेट का खर्च नहीं उठा सकते थे जिसके कारण वह ऑनलाइन क्लास में सम्मिलित नहीं हो पाए और वह निरंतर अपनी पढ़ाई में पीछे होते गए।

सरकार के द्वारा भी इन आर्थिक रूप से पिछड़े हुए विद्यार्थियों के लिए इस संबंध में कोई प्रयास नहीं किया गया।

5. सीखने के घंटों में कमीः–

नियमित रूप से विद्यालय एवं महाविद्यालय जाकर विद्यार्थी अपने संपूर्ण पढ़ाई को एक निश्चित समय में पूर्ण करता था लेकिन दुरस्थ या ऑनलाइन पढ़ाई के कारण सीखने के घंटे में कमी आई जिसके कारण सीखने की हानि हुई एवं शैक्षणिक उपलब्धि में कमी आई, जिसका नकारात्मक असर विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़ा।

6. ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पास संसाधनों की अपर्याप्तताः–

ह्यूमन राइट्स वॉच में पाया की महामारी के दौर में विद्यालय सभी विद्यार्थियों को समान रूप से दूरस्थ शिक्षा या ऑनलाइन शिक्षा देने में असमर्थ थे। इसका प्रमुख कारण सरकारों द्वारा शिक्षा प्रणाली में भेदभाव तथा असमानताओं को दूर करने घरों में सस्ती एवं सुचारु बिजली व्यवस्था एवं सस्ती इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने में उनकी नाकामयाबी है। जिसके कारण विद्यार्थी ऑनलाइन क्लास में सम्मिलित होने में असमर्थ रहा। ऑनलाइन एवं दूरस्थ शिक्षा को अचानक एवं तेजी से अपनाना छात्रों, शिक्षकों एवं शिक्षण संस्थानों के समक्ष एक बड़ी चुनौती के रूप में आया था।

7. रोजगार पर नकारात्मक प्रभावः–

कोविड–19 के महामारी के कारण निजी संस्थाओं को आर्थिक नुकसान हुआ जिसके कारण वह अपने संस्थानों से कर्मचारियों की छंटनी करने लगे और बहुत सारे कर्मचारी को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा और बेरोजगारी का सामना करना पड़ा।

सरकारी संस्थानों में अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं के स्थगन से एवं भर्ती प्रक्रिया पर रोक लगाने से बेरोजगारी अपनी चरम सीमा में पहुंच गई। जब बेरोजगारी अधिक होती है तो शिक्षा का प्रतिशत काफी कम हो जाता है क्योंकि इस समय संघर्ष जीवन निर्वाह एवं पेट पालने के लिए करना पड़ता है।

कोविड–19 का शिक्षा पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव एवं नवीन आयामः–

कॉविड–19 महामारी ने केवल भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व को गंभीर रूप से प्रभावित किया। कोविड–19 ने विश्व स्तर पर स्कूली शिक्षा एवं उच्च शिक्षा दोनों को ही अत्यधिक प्रभावित किया स्कूलों के बंद होने से लगभग 1.6 अरब से अधिक के छात्र प्रभावित हुए। स्कूल बंद होने के दौरान ऑनलाइन पद्धति को अपनाया गया, लेकिन इसको करने के लिए व्यवसायिक विकास की आवश्यकता थी। कोविड–19 के संक्रमण काल में पूरे भारत के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों को बंद कर दिया गया।

सरकारी स्कूलों के बंद हो जाने के कारण निम्न मजदूर वर्ग के बच्चे, जिनके लिए स्कूल उनको एक निश्चित दिनचर्या प्रदान करने के साथ–साथ एक सुरक्षित स्थान भी प्रदान करता था, उसके बंद हो जाने के कारण वह भी गंभीर रूप से प्रभावित हुए। उनको दिन का जो मध्यान भोजन मिलता था उससे भी वह वंचित हो गए। उनकी शिक्षा के स्तर में जो कमी आई वह अपूर्णनीय थी।

मजदूर माता–पिता के काम में चले जाने के बाद इन बच्चों पर किसी का नियंत्रण नहीं रह गया था, इसलिए यह बच्चे दिन भर खेल कूद में लगे रहे और कुछ बच्चे तो गलत संगत में पड़कर नशा करना, शराब पीना जुआ खेलना प्रारंभ कर दिए जो भारत के भविष्य के लिए अत्यंत खतरनाक बात थी।

लगातार अनिश्चय की स्थिति, तनाव एवं चिंता के कारण उनका ध्यान अपनी शिक्षा की तरफ से मन हटने लगा और वे अपने लक्ष्यों के प्रति उदासीन होने लगे। किंतु महामारी के दौरान हुए शैक्षिक निरंतर की कमी को दूर करने के लिए सरकार द्वारा अनेक प्रयास तेजी से प्रारंभ किए जाने लगे सरकार द्वारा शिक्षा विभाग को आदेश दिया गया कि सभी सरकारी गैर सरकारी विद्यालय महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में ऑनलाइन मोड में पढ़ाई प्रारंभ करवाई जाए इसके बहुत ही ज्यादा सकारात्मक परिणाम निकले इससे शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव हुआ।

नियमित संपर्क कक्षाओं की जगह अब विद्यार्थियों को ऑनलाइन मोड में पढ़ाई कराई जाने लगी शिक्षकों द्वारा अपनाई गई इस नवीन शिक्षण पद्धति द्वारा निर्मित पढ़ाई परीक्षाओं तथा प्रतियोगिकी परीक्षाओं का संचालन किया जाने लगा। कोविड–19 के कारण फैली महामारी के होने से लगने वाले लॉकडाउन समय में इस ऑनलाइन सुविधा ने शिक्षा को आसान और आरामदायक बनाया।

विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई के क्षेत्र में नवीन आयाम प्रस्तुत किए गए जो शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने में काफी हद तक सफल रहे। सरकार द्वारा भी शिक्षा विभाग में कई सकारात्मक प्रयास किए गए जिनका सकारात्मक प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में देखने को मिला।

हर परिवर्तन एक उम्मीद की किरण लाता है और सकारात्मकता भी दृष्टिगोचर होती है।शिक्षा पर भी कोविड–19 के कुछ सकारात्मक प्रभाव एवं नवीन आयाम देखने को मिले जिनका वर्णन निम्नलिखित है।

विद्यालय स्तरीय सकारात्मक प्रभाव एवं नवीन आयामः–

1. विद्यार्थियों में विभिन्न कौशलों का विकास –

लॉकडाउन के कारण बच्चों एवं बड़ों का घर से निकलना बंद हो गया था। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को व्यस्त रखने के लिए बेकिंग, पेंटिंग, बागवानी, पुस्तकों का अध्ययन एवं कंप्यूटर सीखना आदि कुछ ऐसे कौशल थे जिन्हें सभी उम्र के विद्यार्थियों ने सीखा।

यह सभी कौशल विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन सभी छात्रों के समग्र विकास में योगदान करते हैं तथा विद्यार्थियों के लिए परंपरागत पाठ्यक्रम से अलग गैर पारंपरिक पाठ्यक्रम का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

2. शिक्षा संबंधी उद्योगों पर सकारात्मक प्रभाव–

कोविड के पहले शिक्षण प्रबंधन प्रणाली को विकसित करने वाली कंपनियों का एक खास क्षेत्र माना जाता था। कोविड के पूर्व ऑनलाइन शिक्षण ज्यादा प्रचलित नहीं था और यह उन लोगों तक ही सीमित था जिनके पास आर्थिक संसाधन उपलब्ध थे।

कोविड के समय प्रारंभ की गई ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली के दौरान इन कंपनियों की मांग एवं आवश्यकता के कारण इन कंपनियों को आर्थिक लाभ हुआ इस प्रकार शिक्षा के साथ–साथ संबंधित उद्योगों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

3. छात्रों एवं शिक्षकों के बीच सहयोग की भावना का विकास–

कोविड–19 में शिक्षकों एवं छात्रों के बीच की दूरी को काफी हद तक काम कर दिया। शिक्षकों ने समय की मांग को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को अपूर्व सहयोग दिया। शिक्षण प्रक्रिया एवं सीखने की प्रक्रिया को अब अलग–अलग वर्गों में बांटने की जरूरत नहीं थी। कॉविड–19 के द्वारा फैली महामारी ने दूरी, सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच सहयोग की भावना का विकास किया।

4. शिक्षा पद्धति में नवीनता का विकास–

कोविड–19 के कारण जब पूरे भारत के विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय बंद हो गए तब ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के द्वारा उन्हें शिक्षा प्रदान की गई। वास्तव में यह परंपरागत शिक्षा प्रणाली से अलग हटकर एक नवीन प्रणाली के रूप में विकसित हुई। पूर्व में ऑनलाइन शिक्षण पद्धति से बहुत से छात्र अनभिज्ञ थे इस पद्धति के द्वारा उन्हें कंप्यूटर का ज्ञान हुआ एवं एक नवीन प्रकार की शिक्षण प्रणाली से वे परिचित हुए।

5. ई–पाठशाला–

ई–पाठशाला पोर्टल का प्रारंभ मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के संयुक्त तत्वाधान में नवंबर 2015 को प्रारंभ किया गया। ई–पाठशाला शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों एवं शोधकर्ताओं के लिए शैक्षिक संसाधनों को पूर्ति करता है।

यह हिंदी अंग्रेजी एवं उर्दू भाषाओं में उपलब्ध है। ई–पाठशाला में शिक्षकों, विद्यार्थियों, पालकों एवं शोधकर्ताओं के लिए पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। ई–पाठशाला में पाठ्य पुस्तक, पत्रिकाओं, ऑडियो,वीडियो प्रिंट एवं गैर प्रिंट सामग्रियों सहित अन्य शैक्षणिक सामग्रियों को प्राप्त कर सकते हैं इन सभी सामग्रियों के ई पाठशाला में डाउनलोड पर कोई सीमा न होने के कारण उपयोगकर्ता उन्हें ऑफलाइन उपयोग के लिए भी डाउनलोड कर सकते हैं।

6. दीक्षा पोर्टल–

कोविड–19महामारी के समय सभी शिक्षण संस्थानों के बंद हो जाने के कारण विद्यार्थियों को ऑनलाइन क्लास के अतिरिक्त अन्य शैक्षिक संसाधनों की आवश्यकता महसूस हो रही थी। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए दीक्षा पोर्टल का निर्माण किया गया। यह एक ऐसा पोर्टल है जिस पर आवश्यकता अनुसार पाठ्यक्रम की किताबें, वीडियो एवं अन्य पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। दीक्षा पोर्टल में उपलब्ध पाठ सामग्री अलग–अलग भाषाओं में है जिससे विभिन्न प्रांतो के एवं विभिन्न भाषाएं विद्यार्थी इसका लाभ उठा सकते हैं यह पोर्टल लगभग 250 शिक्षकों द्वारा तैयार किया गया है इस पोर्टल में 80000 से 100000तक की पुस्तक कक्षा पहली से लेकर कक्षा 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध है।

सभी पाठ्य सामग्री को क्यूआर कोड के माध्यम से भी देखा जा सकता है। दीक्षा पोर्टल में एक ऐप भी मौजूद है जिसको गूगल प्ले स्टोर के माध्यम से डाउनलोड किया जा सकता है।

महाविद्यालय स्तरीय सकारात्मक प्रभाव एवं नवीन आयाम–

1. स्वयं पोर्टल–

उच्चतर शिक्षा के लिए पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय जिसका नाम बदलकर अब शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है एवं अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा एक नवीन ऑनलाइन पोर्टल का निर्माण किया गया था।

जिसका नाम स्वयं पोर्टल रखा गया इससे माइक्रोसॉफ्ट की सहायता से तैयार किया गया था सम पोर्टल के निर्माण की घोषणा 01–02–2017 को भारत सरकार द्वारा आम बजट में की गई थी जिसे कुछ समय बाद तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने 09–07–2017 को लांच किया था।

इस पोर्टल को बनाते समय तीन सबसे प्रमुख बातों पर ध्यान दिया गया–सबके लिए सर्वथा उपलब्ध, निष्पक्षता एवं उच्च गुणात्मकता से परिपूर्ण। इस जन्म पोर्टल में कक्षा नवमी से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओं तक के कोर्स उपलब्ध रहेंगे। यह प्रत्येक विद्यार्थी के लिए निशुल्क रहेगा इस स्वयं पोर्टल में वीडियो व्याख्यान कोर्स से संबंधित पाठ्य सामग्री को डाउनलोड किया जा सकता है और उनका प्रिंट भी निकाला जा सकता है स्वयं पोर्टल के द्वारा प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया जा सकते हैं।

2. स्वयं प्रभा–

स्वयं प्रभा की शुरुआत 9–7–2017 को हुई। इसमें सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कला मानविकी, वाणिज्य विषयों के साथ कृषि, कानून, चिकित्सा प्रौद्योगिकी कानून एवं यांत्रिकी विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम उपलब्ध है। यह 24 घंटे एवं सातों दिन की उपलब्धता के आधार पर भारत के सभी जगह डीटीएच के माध्यम से 32 उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक चौनल प्रदान करने की एक पहल है। कोविड–19 की भयंकर महामारी के समय इस पोर्टल ने लाखों विद्यार्थियों की शैक्षिक मदद की।

3. राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी–

कोविड–19 के समय जब लॉकडाउन लगा एवं सभी शैक्षिक संस्थान बंद हो गए तो विद्यार्थियों की शिक्षा संबंधित समस्याओं से निपटने के लिए अनेक ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग किया गया। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी भी एक ऐसे सशक्त ऑनलाइन माध्यम के रूप में सामने आई जिसमे भारत का कोई भी विद्यार्थी 70 लाख से अधिक पुस्तकों को पढ़ सकता हैं। यह भारत देश की सबसे बड़ी ऑनलाइन लाइब्रेरी है। राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी आई आई टी खड़गपुर द्वारा विकसित ऑनलाइन लाइब्रेरी है जो कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन एक योजना है। यह प्रासंगिक सोर्स से मेटा डाटा इकट्ठा करती है तथा उसका मिलान करके पूर्ण पाठ्य सूचकांक प्रदान करती है। इस लाइब्रेरी से प्राप्त डाटा विश्वसनीय एवं गुणवत्ता युक्त होते हैं। इस डिजिटल लाइब्रेरी का अत्यधिक प्रयोग कोरोना के समय में विद्यार्थियों द्वारा किया गया। वास्तव में डिजिटल लाइब्रेरी, डिजिटल तकनीक, इंटरनेट कनेक्टिविटी एवं भौतिक सामग्री को मिलाकर बनाई गई है।

4. ई–पीजी पाठशाला–

भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा स्नातकोत्तर स्तर के छात्र–छात्राओं के लिए ई–पीजी पाठशाला की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए ई–पुस्तक पढ़ने की सुविधा देना है।

ई–पीजी पाठशाला सामाजिक विज्ञान, कला, ललित कला, गणित, विज्ञान, भाषा विज्ञान आदि 70 विषयों में उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम आधारित इंटरेक्टिव ई–सामग्री प्रदान करती है। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इससे छात्र बिना इंटरनेट के भी पढ़ सकते हैं। इस प्रकार सरकार द्वारा कोविड–19 के समय सर्वत्र भारत में फैली महामारी के कठिन समय में शिक्षा जगत के लिए कई सकारात्मक प्रयास किये गये। इन्हीं सफल प्रयासों का परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के बीच ज्यादा शैक्षिक अंतराल नहीं हुआ और वह अपने अध्ययन में लग रहे।

और इस शैक्षिक निरंतर के कारण ही लाकड़ौन खतम होने के पश्चात विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय खुलने पर विद्यार्थियों को पुनः संपर्क कक्षाओं में जाने में ज्यादा दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ा। कोविड–19 के दौरान सरकार एवं शिक्षा मंत्रालय एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा जो प्रयास किया गया उसका बहुत अधिक सकारात्मक परिणाम सामने आया।

निष्कर्षः–

कोविड–19 महामारी के फल स्वरुप शिक्षा जगत में पढ़ने वाले प्रभाव कुछ सकारात्मक रहे तो कुछ नकारात्मक भी रहे। समय–समय पर सरकार द्वारा शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए किंतु कोरोना वायरस के द्वारा फैली महामारी ने न केवल भारत वरन विश्व के सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया था जिसके कारण हर देश की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व्यवस्था छिन्न–भिन्न हो गई थी। कोरोनावायरस महामारी के दौरान सभी शैक्षिक संस्थानों के बंद हो जाने के कारण शिक्षा की पारंपरिक विधियो को छोड़कर छात्रों एवं शिक्षकों ने शिक्षा की ऑनलाइन पद्धति को अपनाया। इस लॉकडाउन काल में यही एक विकल्प था जो छात्र एवं शिक्षक को जोड़े रखा था तथा छात्रों की शैक्षिक निरंतरता को बनाए रखा।

हालांकि बहुत से छात्र एवं शिक्षक इस ऑनलाइन शैक्षिक पद्धति के जानकार थे किंतु बहुत से लोग इस पद्धति से अनभिज्ञ भी थे। लेकिन उन्होंने समय के अनुसार ऑनलाइन पद्धति के महत्व को समझा एवं उसे सीख कर अपने शैक्षिक व्यवधान को खत्म किया। शिक्षकों के बीच शिक्षण काल के दौरान आपसी सहयोग की भावना में भी बढ़ोतरी हुई।

कोरोना महामारी के समय यह भी देखने को मिला कि प्रौद्योगिकी तक हर किसी की पहुंच ना होने के कारण शैक्षिक असमानता में वृद्धि हुई विशेष कर ग्रामीण एवं पिछड़े सुदूर इलाकों में इंटरनेट की कमी ने इस समस्या को और अधिक बढ़ा दिया कॉविड–19 ने सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों को प्रभावित किया। सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर अत्यंत निम्न स्तर पर पहुंच गया। हालांकि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति ने कोविड–19 के महामारी के दौरान शिक्षा की निरंतरता को बनाए रखने के लिए केंद्रीय कारण एवं डिजिटलीकरण पर बहुत अधिक ध्यान दिया शहरों में इसके बहुत सकारात्मक परिणाम भी मिले लेकिन सुदूर अंचल में इंटरनेट की अनुपलब्धता से बहुत सारे विद्यार्थियों को इसका लाभ नहीं मिल पाया।

कोविड–19 ने शिक्षा प्राप्ति एवं वितरण के सभी स्तरों को प्रभावित किया। निष्कर्षतरू यह कहा जा सकता है कि कोरोनावायरस से फैले भयानक महामारी के कारण जिससे पूरा विश्व प्रभावित हुआ, उस दौरान भारत सरकार द्वारा हर क्षेत्र में प्रभावी कदम उठाए गए साथ ही साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यंत प्रभावी, सफल एवं महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। सरकार द्वारा ऑनलाइन मोड में पढ़ाई करवाने के लिए विद्यालय और महाविद्यालय को आदेश दिया गया लॉकडाउन के कारण जब सभी शैक्षिक संस्थान बंद हो गए तो यह प्रयास सार्थक रखा सार्थक रहा जिसके करण जब सभी शैक्षिक संस्थान बंद हो गए तो यह प्रयास सार्थक रहा।जिसके कारण शिक्षा में निरंतरता बनी रही। यघपि बहुत से विद्यार्थी संसाधनों की अपर्याप्तता के कारण इस सार्थक पहल से वंचित रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. Research Gate https://www.researchgate.net
2. Human Rights Watch https://www.hrw.org.
3. M.P. Higher Education https://highereducationmp.gov.in
4. Frontier https://www.frontiersin.org
5. National Institute of Health https://www.ncbi.nlm.nih.gov